



धार्मिक गतिविधियों में भाग न लेना गलत, अधिकारी की बर्खास्तानी जायज़ : कोर्ट - 13



सेंसेक्स में गिरावट 313.70 अंक टूटकर 84,587.01 पर हुआ बंद - 13



अतिथियों का अभिवादन स्वीकार करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी - 2



सैयद मोदी इंडिया इंटरनेशनल बैडमिंटन टैंपिनजिया में भारतीय डिलाइंगों की शानदार शुरुआत - 14

6th वार्षिकोत्सव
विशेषांक
मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

मार्गदर्शी शुक्र पक्ष शष्ठी 12:02 उपरांत सप्तमी विक्रम संवत् 2082

अनुत्तर विचार

लखनऊ |

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बैंगलोर कानपुर
गुरुदाबाद अयोध्या हल्द्वानी

बुधवार, 26 नवंबर 2025, वर्ष 35, अंक 297, पृष्ठ 14 मूल्य 6 लाख

युगांतकारी... राम मंदिर के शिखर पर फहरा धर्मध्वज

अजय दयाल, अयोध्या

अमृत विचार: अयोध्या में मंगलवार की सुबह एक और नया इतिहास रचा गया। विवाह पंचमी के शुभ अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों सनातन परंपरा और

आस्था का प्रतीक धर्मध्वज का राम मंदिर के शिखर पर प्रतिष्ठापित हुआ तो

यह धर्मध्वज केवल ध्वज नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के पुनर्जगरण का ध्वज है। इसका भगवा रंग इस पर रखित सूर्योदय की छायाएँ, परिंत ओम शब्द व अकिंत किंविद्वार बुक्ष रामराज्य की कीर्ति को प्रतिरूपित करता है। यह ध्वज संकलन और संहिते से सुनें की गण्य है। यह ध्वज सदियों से चले आ रहे सभनों का साकार रखता है। एक ध्वज सतों की साकाना और समाज की सम्पर्किता की सार्वक परिणामित है। सदियों और सहस्राद्यों तक यह धर्मध्वज प्रभु राम के आशों व सिद्धांतों का उद्घोष करेगा।

- प्रधानमंत्री मोदी

अयोध्यावासियों और संत समाज के साथ यह क्षण जन-जन के लिए भावपूर्ण और ऐतिहासिक बन गया। 500 वर्षों की प्रतीक्षा, संर्घ और तपस्या के बाद राममंदिर के शिखर पर स्थापित हुआ धर्मध्वज सनातन आस्था की मोदी ने इस क्षण को युगांतरकारी कहा।

'सियावर रामचंद्र की जय' का उद्घोष करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहा, रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा पर राम से राष्ट्र के

संकल्प की चर्चा करते हुए मैंने कहा था कि आने वाले एक हजार वर्षों के लिए भारत की नींव मनजवूत करनी है और जो सिर्फ वर्तमान की सोचते हैं, वे आने वाली पीढ़ियों के साथ अन्याय करते हैं। हमें वर्तमान के साथ-विश्वक प्रतिष्ठा का साक्ष्य बनकर लहराया।

जब हम नहीं थे, यह देश तभी था और जब हम नहीं रहेंगे, यह देश तब भी रहेगा। हमें दूरवृष्टि के साथ काम करना होगा। हमें आने वाले दशकों और सदियों को ध्यान में रखना ही होगा। उन्होंने



ध्वज रघुकुल परंपरा और धर्म का प्रतीक: भागवत संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि रामराज्य का ध्वज, जो कभी अयोध्या में फहराता था और सूर्योदय में अपने आलोक से सुख-शांति प्रदान करता था, वह ध्वज आज फिर नीचे से ऊपर बढ़कर शिखर पर प्रियांजन की चुका है। इसे हमने अपनी आखों से इसी जम में देखा है। ध्वज धर्म का प्रतीक होता है। इतना ऊंचा ध्वज चढ़ाने में भी समय लगा, टीक ऐसे ही मंदिर बनाने में भी समय लगा। 500 साल छोड़ते ही भी 30 साल तो लगे ही। उस मंदिर के रूप में हमने उत्तर को ऊपर पहुंचाया है जिससे सूर्योदय विवर का जीवन ठीक चलेगा। उसी धर्म का प्रतीक भगवा रंग इस धर्मध्वज का राह है।



ये यज्ञ की पूर्णाहृति नहीं, नए युग का शुभारंभ: योगी
मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ध्वजारोहण को यज्ञ की पूर्णाहृति मात्र नहीं, बल्कि नए सुरा का शुभारंभ करार दिया। उन्होंने भव्य मंदिर के निर्माण में योगदान देने वाले कार्योगियों का भी अभिनंदन किया। कहा कि आज का पावन दिन उन पूज्य संसांहों, योद्धाओं, श्रीराम भक्तों की अखंड साधना-संर्ख को समर्पित है, जिन्होंने आदोनन व संर्घ के लिए जीवन को समर्पित किया। विवाह पंचमी का दिव्य संयोग इस उत्सव को और भी पावन बना रहा है। इस अवसर पर योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय संवय सेवक संघ के सरकार चालक मोहन भागवत को स्मृति चिह्न भी प्रदान किया।

पीएम के हैंडल धूमाते ही ऊपर चढ़ने लगा धर्म ध्वज प्रधानमंत्री मोदी ने जैसे ही हैंडल (लीवर सी डिवाइस) धूमाता धर्मध्वज धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगा। पीएम ने मंदिर के पुरुष शिखर पर 161 फीट की ऊंचाई पर धर्मध्वज छढ़कर रामायण कालीन आस्थान्तिक प्रपादण को सजीव किया। ध्वजारोहण प्रक्रिया शुरू होने के साथ ही अभिनंदन मुहूर्त में पूरे परिसर में शिखर, वैदिक मंत्रोच्चार और धर्मियों की धनि गूंज उठी, जिसने तावतरण को आधिकारिक बना दिया। संघ प्रमुख मोहन भागवत, राज्यपाल अनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस प्रतिहासिक क्षण के साथी बने।

विश्व ने सुनी अयोध्या से उठी जय श्री राम की गूंज अयोध्या से किसी भवित्व के लिए जय श्री राम की गूंज आयी है। यहाँ इंटरनेशनल मीडिया की भी निगाह लगी हुई थीं। धर्मसंघ शहर की सारी प्रमुख सड़कों पर जयोध्य करते ब्राह्मण उमड़ और आराम नाम की गूंज से नगर भवित्वरस से सरबोर हो गया। लता मंगेशकर चांद पर हजारों की संख्या में भवत एकत्रित होकर धर्मध्वजा स्थापित की अपरिषद जनसमूह भवाविष्ट होकर जय श्रीराम के उद्घोष में डूब गया।



हिरासत में मौत सिस्टम पर धब्बा, देश नहीं करेगा बर्दाशत

थानों में सीसीटीवी कैमरों की कमी पर सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी, कहा- हिरासत में मौत नहीं होने दे सकते

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हिरासत में हिस्सा और मौत व्यवस्था पर एक धब्बा है और देश इसे धब्बे नहीं करेगा।

बैंच ने पूछा- केंद्र इस अदालत को हल्के में ले रहा है क्या?



पीट ने केंद्र से पूछा कि उसने अनुपालन हलकनामा वाले नहीं दखिल किया है। न्यायमूर्ति विक्रमनाथ ने पूछा, केंद्र इस अदालत को हलकनामा दाखिल करेगा। पीट ने हलकनामे दाखिल न करने वाले राज्यों और केंद्र शासित प्रश्नों को निर्णय किया कि जो जो देश तो ही तो गूंज प्रियंग में उनके प्रधान संविध अपने स्पष्टीकरण के साथ अंतराल के लिए तहकीनामे दाखिल नहीं किया जाते हैं तो गूंज प्रियंग में उनके प्रधान संविध अपने धर्मध्वज के लिए निर्णय किया।

अदालत के समक्ष उपराज्यकारके हलकनामे दाखिल नहीं किया जाता है।

इस मामले में संविध अदालत ने आदोनन व संर्घ के लिए निर्णय किया।

मानवाधिकारों के हलकनामे दाखिल नहीं किया जाता है।

</div

कार्यालय नगर पंचायत डलमऊ, जनपद-रायबरेली

अमृत विचार की 6वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर

नगर पंचायत डलमऊ जनपद रायबरेली की ओर से समस्त नगर वासियों एवं देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



स्वच्छ डलमऊ

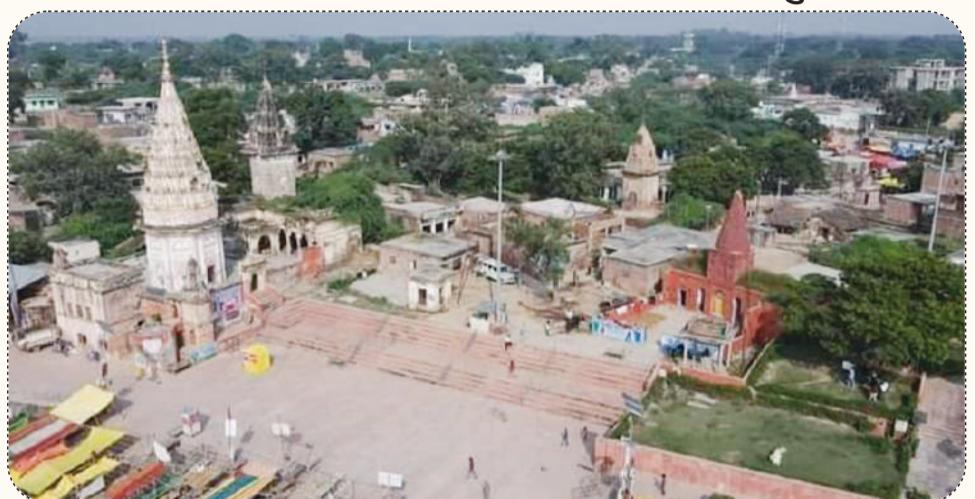
सुन्दर डलमऊ



एक कदम स्वच्छता की ओर

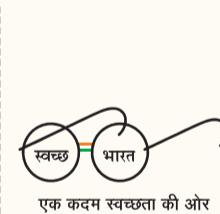
स्वच्छ सर्वेक्षण

2025



सभी सम्मानित नगर वासियों से अपील की जाती है-

1. यह नगर आपका है कृपया इसे स्वच्छ बनाये रखने में सहयोग करें।
2. 'माँ गंगा' को स्वच्छ रखे उसमें किसी प्रकार का विसर्जन व कूड़ा करकट न फेकें।
3. 'स्वच्छ भारत मिशन' को सफल बनाये एवं सार्वजनिक व सामुदायिक शौचालय का प्रयोग करें।
4. जल ही जीवन है उसका दुरुपयोग न करें। रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम अपनायें।
5. समस्त करों की अदायगी समय से करें।
6. सार्वजनिक जगह नाला, नाली, साइट पटरी, पार्क आदि पर अतिक्रमण न करें।
7. जन्म-मृत्यु का पंजीकरण 21 दिन के अन्दर करायें।
8. प्लास्टिक पॉलीथीन का प्रयोग न करें।
9. अपने पालतू जानवरों को खुला न छोड़ें।
10. हर व्यक्ति एक वृक्ष अवश्य लगाये, पर्यावरण को बचाये।

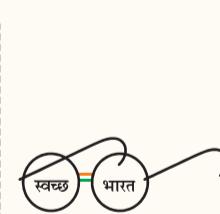


एक कदम स्वच्छता की ओर



स्वच्छ सर्वेक्षण

2025



एक कदम स्वच्छता की ओर



स्वच्छ सर्वेक्षण

2025

स्वच्छ भारत
स्वस्थ भारत

श्री शिवबक्स सोनकर, श्रीमती राजवती सोनकर,

श्री ऋषभ मिश्रा, श्री विनोद निषाद, श्रीमती देवनन्दनी यादव,

श्री विनीत जायसवाल श्रीमती रेशमा,

श्री मो० शकील, श्रीमती सोनम यादव, श्रीमती सुनीता जायसवाल ।

निवेदक-

श्री शुभम गौड़ अध्यक्ष प्रतिनिधि, श्री शोहराब अली लिपिक
श्री सतीश जायसवाल एवं समस्त कर्मचारीगण

(पं० बृजेश लल गौड़)

अध्यक्ष

नगर पंचायत डलमऊ
जनपद-रायबरेली

न्यूज ब्रीफ

नामांतरण की फीडिंग
अटकने से परेशानी

फेटेहपुर, बाराबंकी, अमृत विचार : स्थानीय तहसील में लगभग कुछ माह से उन खत्मनियों में नामांतरण आदेशों की फीडिंग रुकी हुई है, जिनमें खातेदार के नाम के अगे उनका पात्र अंकित नहीं है या जहां गांतों का अंकित बटाया गया नहीं है। परिणामस्वरूप दिखिल-खिल होने के बावजूद नीनी खातेदारों के नाम खत्मनी में छढ़ नहीं पा रहे, जिनसे वादाकारी परेशान हैं। जिन खत्मनियों में खातेदार का पात्र अंकित नहीं है, उनमें तर्माना खातेदार का नाम हटाकर नए खातेदार का दर्ज करना तकहीं रुप से संभव नहीं हो रहा। इसी तरह, जिन खत्मों में सभी सहयोगदारों के अंकितों का विभाजन दर्ज नहीं है और बंबारों की फीडिंग पारित है, उनकी भी फीडिंग और अंकित रुका हुआ। इस संबंध में तहसीली वैशी अहलावत ने बताया कि समस्या के निराकरण के लिए राजस्व परिषद वोट को कई पत्र भेजे जा चुके हैं और जल्द ही सुधार की उम्मीद है।

एसआईआर प्रक्रिया में आयी तेजी

फेटेहपुर, बाराबंकी, अमृत विचार : विषेष मतदाता पुरीक्षण (एसआईआर) में तहसील प्रशासन द्वारा गणना प्रत्रों के संचयन और सत्यापन की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है। कुरुक्षेत्र विधानसभा क्षेत्र के 4 लाख 4 हजार 521 मतदाताओं को गणना प्रत्र वितरित किए जा चुके हैं, जिनका संग्रहण कार्य तर्मान में जरी है। मालवार को महल्ला परवाया, फेटेहपुर, बहनी टोला, नालापार दक्षिणी, नालापार उत्तरी, नगर पंचायत कार्यालय और तहसील सभारार में बड़े स्तर पर अंतर्नाल दिन सत्यापन कैप्य आयोजित किए गए। दोपहर 2 बजे से लगभग 85 हजार 80 गणना प्रत्र सत्यापित किए जा चुके थे, जो कुल वितरण का करीब 45.75 प्रतिशत है।

संवाददाता, रामनगर, बाराबंकी

अमृत विचार : विकासखंड रामनगर के छह धान क्रय केंद्रों में से तीन को छोड़कर बाकी केंद्रों पर धान की खरीदारी नाम मात्र की हो रही है। वहीं, रामनगर क्रय केंद्र पूरी तरह बंद पड़ा है और यहां आज तक खरीदारी शुरू नहीं हो पाई है। इसके चलते किसानों में नाराजगी बढ़ रही है। चंदनापुर स्थित बुढ़वल धान क्रय केंद्रों से धान की उठान नहीं हो रही है, जिससे केंद्रों में धान खेलने के लिए जगह की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। जिनकी अनुसार, चंदनापुर के दोनों बुढ़वल केंद्रों पर लाभाग एक सेंकड़ा किसानों से 4 हजार बिंबंत धान की खरीद

पुलिया से टकराई बाइक, दो दोस्तों की मौत घात लगाकर बारातियों पर हमला, वाहनों में तोड़फोड़

जहांगीराबाद थाना क्षेत्र में हुई दुर्घटना, आठ दिन पूर्व ही गुजरात से घर लौटे थे दोनों युवक

रप्तार की मार

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी

अमृत विचार : मंगलवार दोपहर हुए एक दर्दनाक सड़क हादसे में बाइक सवार दो दोस्तों की मौत हो गई। रप्तार के चलते इनकी बाइक पुलिया से जा रहा कि क्षेत्र में दरहरा गांव स्थित एक बैंगन लैन में दोस्तों ने दोस्तों की बाइक सवार दोस्तों की मौत हो गई। रप्तार के बाद दोस्तों की बाइक समेत नीचे नदी के दूसरे छोर पर रहने वाले मृतक किसानों का विभाजन दर्ज करना तकहीं रुप से संभव नहीं हो रहा। इसी तरह, जिन खत्मों में सभी सहयोगदारों के अंकितों का विभाजन दर्ज नहीं है और बंबारों की फीडिंग पारित है, उनकी भी फीडिंग और अंकित रुका हुआ।

जानकारी के अनुसार यह हादसा मंगलवार की दोपहर जहांगीराबाद

थाना क्षेत्र में दरहरा पुलिया पर हुआ। टिकैतनगर थाना क्षेत्र के ग्राम बांसांग निवासी सुनील पुत्र रामहरख व मजरा कमियर वासी सुबह कार सामने खड़े ट्रक में टकरा गई। जनकारी के अनुसार लोनीकटरा थाना क्षेत्र के ग्राम सरायां पांडे निवासी रामसाहें अपने दोस्तों के बाद रात के साथ थाना क्षेत्र में शामिल होने गया था। मंगलवार सुबह घर पर वापस आते समय इसी थाना क्षेत्र के ग्राम चांद सरायं के पास कार सामने खड़े ट्रक से टकरा गई। इस भीषण टकराए में गंगार रुप से धायल शानू की मौत हो गई, जबकि विकास रावत को गंगार दरशा में सोएचरी गोसाईंज दो ट्रोली सेवर लखनऊ रेफर किया गया। मंगलवार रात्रि शाम जब शानू का शव गांव पहुंचते ही परिजनों में रोना पिटना मध्य गया।

गई जहां डाक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने दोस्तों की मौत हो गई। उधर से गुजरे लोगों ने पुलिस को सचाना देकर पुलिस के सहारे पड़ताल की तो दोनों का नेपुलिस को सूचना दी, मौके पर पहुंची पुलिस इन्हे सीएचसी लेकर रप्तार बाइक समेत नीचे नदी के दूसरे छोर पर रहने वाले मृतकों के परिवार में निकला। जहां पहुंचने के लिए

गोण्डा जिला होकर जाना पड़ता है। परिजनों को सचाना देकर पुलिस ने शरों को पोस्टमार्ट के लिए भेज दिया है। मृतकों के परिवार में निकला।

जहां पहुंचने के लिए गोण्डा जिला होकर जाना पड़ता है।

आठ दिन पहले सूरत से आए बाराबंकी, अमृत विचार : शादी लोगों ने हमला कर दिया। पीड़ित थे गांव : पेटिंग के काम में माहिर सुनील व दोवा में गंगरी दोस्ती थी, पर घात लगाए दबंगों ने लाठी-डंडे के राजेन्द्र, अंगद, छोटा, राजू, मंगल वहीं दोनों अपने घर के कमाऊ से हमला करने के साथ ही वाहनों में तोड़फोड़ की। हमले में कई लोगों ने तोड़फोड़ की। हमले में बाराबंकी के गांडियों को तोड़ना शुरू कर दिया। विरोध करने पर सूरत से घर वापस आए थे। इसी बाराबंकी निवासी बहादुर के सिर बैच जहांगीराबाद थाना क्षेत्र के ग्राम चांद सरायं के पास कार सामने खड़े ट्रक से टकरा गई। इस भीषण टकराए में गंगार रुप से धायल शानू की मौत हो गई, जबकि विकास रावत को गंगार दरशा में सोएचरी गोसाईंज दो ट्रोली सेवर लखनऊ रेफर किया गया। मंगलवार रात्रि शाम जब शानू का शव गांव पहुंचते ही परिजनों में रोना पिटना मध्य गया।

बाराबंकी, अमृत विचार : लखनऊ के गोसाईंज थाना क्षेत्र में मंगलवार सुबह कार सामने खड़े ट्रक में टकरा गई। जनकारी के अनुसार लोनीकटरा थाना क्षेत्र के ग्राम सरायां पांडे थाना क्षेत्र स्थित एक बैंगन लैन में शामिल होने गया था। मंगलवार सुबह घर पर वापस आते समय इसी थाना क्षेत्र के ग्राम चांद सरायं के पास कार सामने खड़े ट्रक से टकरा गई। इस भीषण टकराए में गंगार रुप से धायल शानू की मौत हो गई, जबकि विकास रावत को गंगार दरशा में सोएचरी गोसाईंज दो ट्रोली सेवर लखनऊ रेफर किया गया। मंगलवार रात्रि शाम जब शानू का शव गांव पहुंचते ही परिजनों में रोना पिटना मध्य गया।

बाराबंकी, अमृत विचार : शादी लोगों ने हमला कर दिया। पीड़ित

थे गांव : पेटिंग के काम में माहिर सुनील व दोवा में गंगरी दोस्ती थी, पर घात लगाए दबंगों ने लाठी-डंडे के राजेन्द्र, अंगद, छोटा, राजू, मंगल वहीं दोनों अपने घर के कमाऊ से हमला करने के साथ ही वाहनों में तोड़फोड़ की। हमले में कई लोगों ने तोड़फोड़ की। हमले में बाराबंकी के गांडियों को तोड़ना शुरू कर दिया। विरोध करने पर सूरत से घर वापस आए थे। इसी बाराबंकी निवासी बहादुर के सिर बैच जहांगीराबाद थाना क्षेत्र के ग्राम चांद सरायं के पास कार सामने खड़े ट्रक से टकरा गई। इस भीषण टकराए में गंगार रुप से धायल शानू की मौत हो गई, जबकि विकास रावत को गंगार दरशा में सोएचरी गोसाईंज दो ट्रोली सेवर लखनऊ रेफर किया गया। मंगलवार रात्रि शाम जब शानू का शव गांव पहुंचते ही परिजनों में रोना पिटना मध्य गया।

बाराबंकी, अमृत विचार : शादी लोगों ने हमला कर दिया। पीड़ित

थे गांव : पेटिंग के काम में माहिर सुनील व दोवा में गंगरी दोस्ती थी, पर घात लगाए दबंगों ने लाठी-डंडे के राजेन्द्र, अंगद, छोटा, राजू, मंगल वहीं दोनों अपने घर के कमाऊ से हमला करने के साथ ही वाहनों में तोड़फोड़ की। हमले में कई लोगों ने तोड़फोड़ की। हमले में बाराबंकी के गांडियों को तोड़ना शुरू कर दिया। विरोध करने पर सूरत से घर वापस आए थे। इसी बाराबंकी निवासी बहादुर के सिर बैच जहांगीराबाद थाना क्षेत्र के ग्राम चांद सरायं के पास कार सामने खड़े ट्रक से टकरा गई। इस भीषण टकराए में गंगार रुप से धायल शानू की मौत हो गई, जबकि विकास रावत को गंगार दरशा में सोएचरी गोसाईंज दो ट्रोली सेवर लखनऊ रेफर किया गया। मंगलवार रात्रि शाम जब शानू का शव गांव पहुंचते ही परिजनों में रोना पिटना मध्य गया।

बाराबंकी, अमृत विचार : शादी लोगों ने हमला कर दिया। पीड़ित

थे गांव : पेटिंग के काम में माहिर सुनील व दोवा में गंगरी दोस्ती थी, पर घात लगाए दबंगों ने लाठी-डंडे के राजेन्द्र, अंगद, छोटा, राजू, मंगल वहीं दोनों अपने घर के कमाऊ से हमला करने के साथ ही वाहनों में तोड़फोड़ की। हमले में कई लोगों ने तोड़फोड़ की। हमले में बाराबंकी के गांडियों को तोड़ना शुरू कर दिया। विरोध करने पर सूरत से घर वापस आए थे। इसी बाराबंकी निवासी बहादुर के सिर बैच जहांगीराबाद थाना क्षेत्र के ग्राम चांद सरायं के पास कार सामने खड़े ट्रक से टकरा गई। इस भीषण टकराए में गंगार रुप से धायल शानू की मौत हो गई, जबकि विकास रावत को गंगार दरशा में सोएचरी गोसाईंज दो ट्रोली सेवर लखनऊ रेफर किया गया। मंगलवार रात्रि शाम जब शानू का शव गांव पहुंचते ही परिजनों में

न्यूज ब्रीफ

सांसद ने लोकसभा

अध्यक्ष को लिखा पत्र

सीतापुर, अमृत विचार : सांसद राकेश साठोर ने लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखा है। जिसमें उन्होंने प्रोटोकाल का हवाला दिया है। सांसद की ओर से कहा गया है कि पर्साइएम सियाली उक्ता कोने नहीं उठाती है। ऐसे में जनता से जुड़े कार्य को प्रमाणित हो रहे हैं। कार्रवाई की गम्भीरता को देखते हुए कार्रवाई की मांग की गई है।

सड़क दुर्घटना में घायल राहगीर की मौत

बिसवा, सीतापुर, अमृत विचार : गमपुर कला नाम के बुड़ापुरुष निवासी एक घटना के दौरान राहगीर की मौत हो रही थी। उग्रार के दौरान राहगीर की मौत हो गई। बताते हैं कि हादसा बिसवा सियाली मार्ग स्थित ग्राम अम्बिला के निकट हुआ। घटना को लेकर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।

वाहन की टक्कर से राहगीर की मौत

भिथ्रिया, सीतापुर, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र में सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई। शब्द की फूटावा ग्राम गड़वापुर निवासी अनुप कुमार पुरुष कमलेश के रूप में हुई है। परिजनों ने बताया कि अनुप देश शाम कर्त्त्व की ओर जा रहा था। परसी नामी स्थित पिंडिवाहा स्थान के पास किसी अन्त वाहन ने अनुप को टक्कर मार दी। जिससे उसको मौके पर ही मौत हो गई। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि केस दर्ज करते हुए वाहन चालक की तलाश की जा रही है।

सीडीओ ने निर्माणाधीन बैरक का किया निरीक्षण

भिथ्रिया, सीतापुर, अमृत विचार : मुख्य विकास अधिकारी प्राप्ति एवं योग्यता ने मिश्रिया कोतवाली परसर में निर्माणाधीन पुलिस बैरक का निरीक्षण किया। यहां उन्हें निर्माण कारों में कामिया मिली। निरीक्षण में उन्हें खिड़कियों और ठेकेदार से नाराजी जाते हुए निर्माण कारों में सुधार के निर्देश दिए। इस दौरान सहायक अधिकारी अधिकारी सीधी पाठें और इंखेटर प्रदीप कुमार रिहंग आदि मोजूद रहे।

ऑनलाइन जमा करें जीवित प्रमाण पत्र

सीतापुर, अमृत विचार : वरिष्ठ कार्याधिकारी ने बताया कि सभी पेशनर जीवित प्रमाण पत्र कोषाराम में जमा करें, जो पेशन करता है। आगे वर्ष उसी माह जमा करता है। उन्होंने इस भी बताया कि जीवन प्राप्ति पत्र जमा करता है, आगे वर्ष उसी माह में जमा करता है। उन्होंने इस भी बताया कि जीवन प्राप्ति पत्र जमा करता है, आगे वर्ष उसी माह में जमा करता है।

मोनिस ने नकाबपोश पहलवान को हराया

हरगांव, सीतापुर, अमृत विचार : कार्तिक मेला में हो रही कुशी में पहली कुशी कीदर जम्मू व पुष्टा झारखंड के बीच हुई, जिसमें कीदर ने जीत हासिल की। दूसरी कुशी में पहले पहलवान का वकार ने आसामन दिखाया।

तीसरी कुशी मेला में जीत हासिल की।

तीसरी कुशी मेला में जीत हासिल की। पांचवीं कुशी वकार पहलवान वल्लु ने जीत हासिल की। दूसरी कुशी में पहले पहलवान का वकार ने आसामन दिखाया।

मोनिस ने नकाबपोश

पहलवान को हराया

हरगांव, सीतापुर, अमृत विचार :

महाली बना गाजियाबाद, मेटर और हापुड़ के शातियों की पनाहगाह

कार्यालय संवाददाता, सीतापुर

अंतर्जनपदीय सात शातिर गिरफ्तार

महोली बना गाजियाबाद, मेटर और हापुड़ के शातियों की पनाहगाह



वाहदात के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

अमृत विचार : गाजियाबाद के शातिर सीतापुर को पनाहगाह बनाए थे। शातिरों का गिरोह गाजियाबाद, मेटर और हापुड़ के प्रमुख स्थानों पर खड़े वाहनों से डीजल चुराकर महोली में बेचता था। जिले की काइम बांच ने गाजियाबाद, मेटर और हापुड़ के साथ शातियों को गिरफ्तार किया।

पुलिस अधीक्षक ने बताया कि हाल एक घटना के दौरान राहगीर की मौत हो रही। बताते हैं कि हादसा बिसवा सियाली मार्ग स्थित ग्राम अम्बिला के निकट हुआ। घटना को लेकर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।

शातिर कितनी भी सफाई से वारदात करते हैं लेकिन कहीं न कहीं खेल देते हैं एक गांव में हुई वारदात को बचाता है। कुछ ऐसी वारदात तस्करी का कहना है कि गिरोह एक राय होकर डीजल चुराता रहा है। कुछ ऐसी वारदात को बचाता है। काइम बांच के मार्ग पर जनदीकी की गई थी। 800 लीटर डीजल महोली में चुराकर रखा गया था। एसपी में महोली इलाके के जलालपुर निवासी अरविंद को गिरफ्तार किया गया। धरपकड़ की कार्रवाई में गाजियाबाद के मसुमी थानाक्षेत्र स्थित बड़कारीपुर निवासी इरफान, हापुड़ जनपद के थालाना थानाक्षेत्र स्थित दहरा निवासी अनवर, रखा गया था।

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत विचार

गाजियाबाद के खुलासे की जानकारी देते पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल। ● अमृत



अमृत विचार की
वर्षगांठ के शुभ अवसर पर 6 वीं
आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं



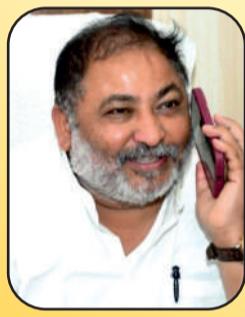
ट्रैफिक नियमों का करें पालन, सुरक्षित रहे सबका जीवन।

क्या करें

- रात्रि में डिपर का प्रयोग करें।
- हेलमेट / सीट बेल्ट का उपयोग करें।
- वाहन निर्धारित गति में ही चलायें।
- भीड़ व चौराहों पर गाड़ी धीमी करें।
- आगे चल रहे वाहनों से उचित दूरी रखें।
- पैदल यात्री जेब्रा क्रासिंग से ही सड़क पार करें।
- कोहरे में फॉग लाइट का प्रयोग करें।

क्या न करें

- नशे की हालत में वाहन न चलायें।
- वाहन बारी और से ओवरट्रेक न करें।
- नाबालिंगों को वाहन न चलाने दें।
- वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग न करें।
- गलत दिशा में वाहन न चलाएं।
- वाहन पर ज्वलनशील पदार्थ लेकर न चलें।
- वाहन पर ओवरलोडिंग न करें।



दयार्थकर सिंह
परिवहन मंत्री (रवतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश

- घायलों को अस्पताल पहुंचाने में मदद करे गुड सेमिटिन बनें
 - पुलिस सहायता हेतु 112 मिलाए
 - एम्बुलेन्स सहायता हेतु 108 मिलाए
 - गभीर रूप से घायलों को अस्पताल पहुंचाकर जान बचाने वाले गुड सेमिटिन को नियमानुसार 25000 रु. का पुस्तकार दिया जाएगा

112
आपातकालीन पुलिस सेवा

परिवहन विभाग हेल्पलाइन
1800-1800-151



सर्वेश चतुर्वेदी
एआरटीओ प्रशासन,
जनपद सीतापुर

कार्यालय नगर पालिका परिषद बिसवाँ-सीतापुर

“स्वच्छ बिसवाँ”



अमृत विचार की
वर्षगांठ के शुभ अवसर 6 वीं
पर आप सभी को
हार्दिक शुभकामनाएं



मा० श्री नरेन्द्र मोदी

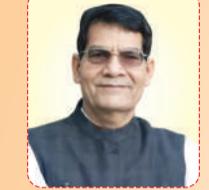
प्रधानमंत्री भारत सरकार

सहयोग आपका

सेवाएं हमारी

मा० श्री योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश



मा० अरविन्द शर्मा
नगर विकास मंत्री
उत्तर प्रदेश



मा० राकेश रान्जन (गुरु)
नगर विकास राज्य मंत्री
उत्तर प्रदेश



मा० सुरेश राही
कारागार राज्य मंत्री
उत्तर प्रदेश



मा० जगेश राही
पूर्व सांसद सीतापुर,
अध्यक्ष राज्य पिछड़ा
वर्ग आयोग, उत्तर प्रदेश



निर्मल कुमार
विधायक
बिसवाँ

नगर पालिका परिषद, बिसवाँ, जनपद-सीतापुर समर्पण सम्मानित नगर वासियों से अनुरोध करती है कि-

1. कृपया नगर को स्वच्छ बनाये रखें तथा करें का भुगतान समय से करें।
2. कृपया वैनिक प्रयोग में पालींथीन बन्द करें, पालींथीन के थेले का प्रयोग करें तथा सामान खरीदने जाते समय कराड़े का थेला साथ लेकर जाएं।
3. दुकानदार कराड़े के फैरीबैस का प्रयोग करें तथा प्लास्टिक के दोना, पतल, गिलास आदि के स्थान पर कागज/पत्ते के बरें हुए दोना पतल, गिलास व थाली आदि का प्रयोग करें।
4. आम जनता के सहयोग से ही पालींथीन का प्रयोग बन्द हो सकता है एवं नगर को प्रदूषण एवं गन्दगी से मुक्त किया जा सकता है।
5. कृपया पानी की टोटियों को खुली न छोड़ें, पानी की बचत करें, पानी को ढक कर रखें।

“जल ही जीवन है”

6. कृपया नगर के सौन्दर्यकरण तथा विकास कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करें।
7. कृपया सार्वजनिक स्थानों पर अतिक्रमण न करें।
8. कृपया खुले में शौच न जाएं।
9. कृपया अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें, नगर पालिका परिषद, बिसवाँ द्वारा लगाये गये पौधों को क्षतिग्रस्त न करें।
10. कृपया डॉर-टू-डॉर कलेक्शन में नगर पालिका का सहयोग करें तथा कूड़ा इधर-उधर न फेंकें।



नीलम चौधरी
अधिकारी
नगर पालिका परिषद
बिसवाँ, सीतापुर



समर्पण सम्मानित
नगर पालिका परिषद बिसवाँ-
सीतापुर



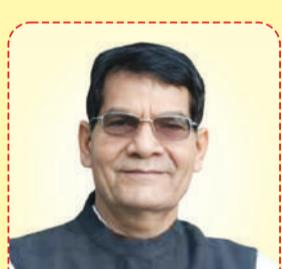
पुर्ण जायसवाल
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद
बिसवाँ, सीतापुर
दिनांक 24.11.2025

कार्यालय नगर पालिका परिषद सीतापुर।



मा० श्री नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री भारत सरकार



मा० अरविन्द शर्मा

नगर विकास मंत्री
उत्तर प्रदेश



मा० राकेश रान्जन (गुरु)

नगर विकास राज्य मंत्री
उत्तर प्रदेश



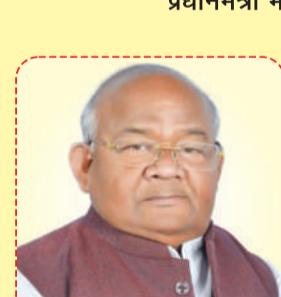
मा० सुरेश राही

कारागार राज्य मंत्री
उत्तर प्रदेश



मा० श्री योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश



मा० राजेश वर्मा

पूर्व सांसद सीतापुर,
अध्यक्ष राज्य पिछड़ा
वर्ग आयोग, उत्तर प्रदेश



वैभव श्रीपाठी

अधिकारी अधिकारी
श्रेणी-1
नगर पालिका परिषद
सीतापुर।

स्वच्छ सर्वेक्षण 2.0

अमृत विचार समाचार पत्र की 6 वीं वर्षगांठ “स्थापना दिवस विशेषांक”
के उपलक्ष्य में नगर पालिका परिषद, सीतापुर अपने नगर

निवासियों से अपील करती है कि

1. नागरिकों से अपील है, कि घर-घर कचरा संग्रहण की प्रक्रिया में समर्पण जनता अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें एवं घर में सूखा एवं गीला कचरा अलग-अलग किया जाय, सूखा कचरा नीते में वीला कचरा हरे कचरे पात्र में ही डाले इसी प्रकार नगर पालिका की गाड़ियों में प्रतिदिन सूखा और गीला कचरा अलग-अलग रेसिडेंसिल करें।
2. आप अपने घर में एक कूड़ेदान में गीला कूड़ा हस्त डिब्बे व सूखा कूड़ा गीला डिब्बे में अवश्य रखें।
3. नगर में निर्मित सामुदायिक शौचालय सार्वजनिक शौचालय/यूनिरल निर्मित पिंक शौचालय का सदैव प्रयोग रेखुले में शौच तथा पेशावर न करें वर्च्चला में सहयोग करें।
4. सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त सामग्री का प्रयोग न करें और न ही दूसरों को करने दें, पॉलीथिन पर्याप्तण के लिये बारीक है, पालीथिन का प्रयोग/विक्रय करते हुये पाये जाने पर 50-50,000.00 तक जुर्माना का प्रविधान है।
5. अपने जानवरों को खुला न छोड़ें, तथा सड़कों व सार्वजनिक स्थान पर न बायें।
6. चाय की बिक्री में कॉफे के ग्लास व कुल्हड़ का प्रयोग करें, प्लास्टिक के ग्लास का प्रयोग न करें।
7. मार्गों एवं गलियों में किसी प्रकार का अतिक्रमण न करें।
8. जन्म-मृत्यु का पंजीकरण 21 दिनों के अन्दर कराकर निःशुल्क प्रमाण पत्र प्राप्त करें।
9. बकाया करों के सरचार्ज में छूट का लाभ उठाए जाने हेतु करों की अदायगी करें।
10. जल का दुरुपयोग रोके जाने हेतु नलों की ढंकी खुली न छोड़ें।
11. डॉर-टू-डॉर कूड़ा लाइन के अन्तर्गत कर्मचारी आपके घरें तक पहुंच रहे हैं, कृपया अपना कूड़ा अलग-अलग कर उठाएं, सड़क या नाली में न फेंकें।
12. बन्दन योजना के अन्तर्गत लालबाग शहीद पार्क का सौन्दर्योंकरण कराया जा रहा है।

उपलब्ध

जेटल जाइंट का जाना

धर्मेंद्र के निधन के साथ भारतीय सिनेमा का एक स्वर्णिम अध्याय माने समाप्त हो गया। एक महान अभिनेता का जाना, सबको उदास कर गया, क्योंकि यह उस संवेदनशील, सौम्य और करिश्मार्थ युग का अंत है, जिसने हिंदी फिल्म उद्योग को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाया। धर्मेंद्र ऐसे अभिनेता थे, जिन्होंने छह दशकों तक न केवल परदे पर बल्कि दशकों के दिलों पर राज किया। उनके अभिनय और स्टारडम ने कई पीढ़ियों को आकर दिया। 60-70 के दशक में उभरते युवाओं के लिए वे एमरिमाय, विनम्र और सहज रोमांस के प्रतीक थे। इसके बाद 80 का दशक आगे-आगे जब भारतीय दर्शक एक ऐसे नायक की तलाश में थे जो तकत, मासूमियत और भावनात्मकता का अद्वितीय संगम हो, वे एक्शन हीरो के बोतों रहे।

अनुपमा और हमराही जैसी फिल्मों में उनकी आँखों की गहराई और संवादों की सादगी रोमांटिक अभिनय का मानक बन गई। शोले में उनकी वीरू की भूमिका ने भारतीय सिनेमा को ऐसा चरित्र दिया, जो आज भी स्मृति और संस्कृति दोनों में जीवित है। इसी तरह युद्ध या धर्म-वीर जैसी फिल्मों में उनका तेज, ऊर्जा और प्रभावशीलता अद्वितीय रही। कामेंडी में भी उनका सहज हास्य कौशल, कॉमिक टाइपिंग, इम्प्रोवाइजेशन दर्शकों के लिए हमेशा याद रहेगा। स्ट्यूकाम ऐसी फिल्म थी, जिसने उनके सादीय और कलात्मक अभिनय का लोहा मनवाया। इस फिल्म में वे अपने किंदार की नीतिक दुविधाओं को जिस शांत गहराई से निपाते हैं, वह शायद ही किसी अभिनेता के लिए संभव हो। इसी तरह अनुपमा और चैरे की चांदनी में उनका संयंत्र अभिनय एक संवेदनशील की परिधाधा प्रस्तुत करता है। सिनेमा से बाहर किंतुकर धर्मेंद्र ने राजनीति में भी सरिय भूमिका निभाया। वे भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर लोकसभा संसद बने। संसिद्ध समय के बावजूद उन्होंने अपने संसदीय क्षेत्र में सड़कों, जल प्रबंधन और स्थानीय स्वास्थ्य सेवाओं को सुधारने के लिए संयंत्र कर दिया, हालांकि वे राजनीति में अपनी प्राकृतिक सहजता नहीं खोज पाए, पर उनकी नीतीय और कोशिशों में ईमानदारी छालकरी थी। धर्मेंद्र महज कुशल अभिनेता ही नहीं थे, वे केंद्रीय संवेदनशील, भाषुक और मानवीय व्यक्ति थे। सह-कलाकारों की तकलीफ में साथ खड़े होना, नए कलाकारों को प्रोत्साहन देना और निजी जीवन में परोपकारिता जैसे गुण बताते हैं कि वे क्यों एक 'जेटल जाइंट' कहे जाते थे। उनकी विरासत बहुआयामी है। वे बौद्धीय विविधा, निरंतरता और गुणवत्ता के प्रतीक थे, तो एक व्यक्ति के रूप में वे प्रेम, करुणा और गरिमा की मिसाल।

अनेक वाले यह समय में जिसना जब भी अपने इतिहास के गौवेश्वरी अध्यायों को पलटेगा, धर्मेंद्र का नाम स्वर्णक्षणों में अंकित रहेगा। उनके किल्ली सफर, व्यक्तित्व और योगदान को देख अनेक काल तक याद रखेगा। हम सभी उहें भारतीय सिनेमा के उस अनोखे सिलारे के रूप में स्वीकारते हैं, जिन्होंने करोड़ों लोगों के लिए आनंद, प्रेरणा और संवेदन का संसार रखा। यह सच है कि धर्मेंद्र का जाना सिनेमा के एक युग का अंत है, पर उनके अभिनय, स्टारडम तथा अनुरूप व्यक्तित्व की चमक हमेशा हमारे सिनेमा प्रेमियों के दिलों में बनी रहेगी।

प्रसंगवाद

'हीमैन' सियासत के परदे पर कभी न बन सका हीरो

धर्मेंद्र लगभग छह दशकों तक बॉलीवुड के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे। उन्होंने शोले, स्ट्यूकाम, चुपके-चुपके, फूल और परथ, बैंदनी जैसी अनेक फिल्मों में यादगार किंदार निभाए, पर सियासत की दुनिया में उनका सफर छोटा और किसी भी रूप में यादगार नहीं रहा। धर्मेंद्र 2004 का लोकसभा चुनाव राजस्थान के बीकानेर लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर लड़े और आराम से जीत गए। जिस शब्द से जीवी सियासत की बात तक नहीं की, जो इंटरव्यू में भी खोला था कि 'मुझे तो बस किल्मे बनानी और करना पसंद है', वही शब्द संसद पहुंच गया। जीवी भी बड़ी शानदार मिली। कीरीब 60 हजार चोटी से, मार उन्होंने फिर कभी चुनाव नहीं लड़ा। राजनीति का उनका सफर यहीं खत्म हो गया।

दरअसल 2004 के लोकसभा चुनाव के बक्तव्य सरकार के अंतिम वर्ष थे। बैंदनी सीट पर पार्टी को एक ऐसा चेहरा चाहिए था, जो जाट बहुल इलाके में पकड़ रखता हो और जिसकी लोकप्रियता से कोयेस का पुराना किला ढह जाए। जाट समुदाय में धर्मेंद्र का जटिल स्ट्रेटेजी परापर था। उनकी फिल्में गांव-गांव में हिट होती थीं। 'शोले' का वीर, 'चुपके चुपके' का डॉ. शर्मला 'यमला पगली दीवाना' का दोस्ती जीवन-ये किंदार निभाया था। शोले तो बस किल्मे बनानी और करना पसंद है, वही शब्द संसद पहुंच गया। जीवी भी बड़ी शानदार मिली। कीरीब 60 हजार चोटी से, मार उन्होंने फिर कभी चुनाव नहीं लड़ा। राजनीति का उनका सफर यहीं खत्म हो गया।

दरअसल 2004 के लोकसभा चुनाव के बक्तव्य सरकार के अंतिम वर्ष थे। बैंदनी सीट पर पार्टी को एक ऐसा चेहरा चाहिए था, जो जाट बहुल इलाके में पकड़ रखता हो और जिसकी लोकप्रियता से कोयेस का पुराना किला ढह जाए। जाट समुदाय में धर्मेंद्र का जटिल स्ट्रेटेजी परापर था। उनकी फिल्में गांव-गांव में हिट होती थीं। 'शोले' का वीर, 'चुपके चुपके' का डॉ. शर्मला 'यमला पगली दीवाना' का दोस्ती जीवन-ये किंदार निभाया था। शोले तो बस किल्मे बनानी और करना पसंद है, वही शब्द संसद पहुंच गया। जीवी भी बड़ी शानदार मिली। कीरीब 60 हजार चोटी से, मार उन्होंने फिर कभी चुनाव नहीं लड़ा। राजनीति का उनका सफर यहीं खत्म हो गया।

खुद धर्मेंद्र ने कई इंटरव्यू में बताया कि उनके बहुत करीबी दोस्त, बैंदनी के तत्कालीन नेता और राजस्थान के बड़े नेता (नाम उन्होंने कभी सार्वजनिक नहीं किया) बार-बार आग्रह करते रहे। बोले, 'धर्म मजी, बस एक बार आ जाओ, इलाके के लिए बहुत कुछ कर सकते हो।' पहले तो उन्होंने साफ़ मना कर दिया। कहा, 'मैं तो फिल्मों का आदमी हूं, मुझे ये सब नहीं आता।' मगर दोस्तों ने जिद पकड़ ली। अंत में धर्मेंद्र मान गए। शर्त सिर्फ़ एक थी, 'ज्यादा प्रचार नहीं करना पड़ेगा, न ज्यादा भाषण देने पड़ेगे।'

खुद धर्मेंद्र ने कई इंटरव्यू में बताया कि उनके बहुत करीबी दोस्त, बैंदनी के तत्कालीन नेता और राजस्थान के बड़े नेता (नाम उन्होंने कभी सार्वजनिक नहीं किया) बार-बार आग्रह करते रहे। बोले, 'धर्म मजी, बस एक बार आ जाओ, इलाके के लिए बहुत कुछ कर सकते हो।' पहले तो उन्होंने साफ़ मना कर दिया। कहा, 'मैं तो फिल्मों का आदमी हूं, मुझे ये सब नहीं आता।' मगर दोस्तों ने जिद पकड़ ली। अंत में धर्मेंद्र मान गए। शर्त सिर्फ़ एक थी, 'ज्यादा प्रचार नहीं करना पड़ेगा, न ज्यादा भाषण देने पड़ेगे।'

खुद धर्मेंद्र ने कई इंटरव्यू में बताया कि उनके बहुत करीबी दोस्त, बैंदनी के तत्कालीन नेता और राजस्थान के बड़े नेता (नाम उन्होंने कभी सार्वजनिक नहीं किया) बार-बार आग्रह करते रहे। बोले, 'धर्म मजी, बस एक बार आ जाओ, इलाके के लिए बहुत कुछ कर सकते हो।' पहले तो उन्होंने साफ़ मना कर दिया। कहा, 'मैं तो फिल्मों का आदमी हूं, मुझे ये सब नहीं आता।' मगर दोस्तों ने जिद पकड़ ली। अंत में धर्मेंद्र मान गए। शर्त सिर्फ़ एक थी, 'ज्यादा प्रचार नहीं करना पड़ेगा, न ज्यादा भाषण देने पड़ेगा।'

खुद धर्मेंद्र ने कई इंटरव्यू में बताया कि उनके बहुत करीबी दोस्त, बैंदनी के तत्कालीन नेता और राजस्थान के बड़े नेता (नाम उन्होंने कभी सार्वजनिक नहीं किया) बार-बार आग्रह करते रहे। बोले, 'धर्म मजी, बस एक बार आ जाओ, इलाके के लिए बहुत कुछ कर सकते हो।' पहले तो उन्होंने साफ़ मना कर दिया। कहा, 'मैं तो फिल्मों का आदमी हूं, मुझे ये सब नहीं आता।' मगर दोस्तों ने जिद पकड़ ली। अंत में धर्मेंद्र मान गए। शर्त सिर्फ़ एक थी, 'ज्यादा प्रचार नहीं करना पड़ेगा, न ज्यादा भाषण देने पड़ेगा।'

खुद धर्मेंद्र ने कई इंटरव्यू में बताया कि उनके बहुत करीबी दोस्त, बैंदनी के तत्कालीन नेता और राजस्थान के बड़े नेता (नाम उन्होंने कभी सार्वजनिक नहीं किया) बार-बार आग्रह करते रहे। बोले, 'धर्म मजी, बस एक बार आ जाओ, इलाके के लिए बहुत कुछ कर सकते हो।' पहले तो उन्होंने साफ़ मना कर दिया। कहा, 'मैं तो फिल्मों का आदमी हूं, मुझे ये सब नहीं आता।' मगर दोस्तों ने जिद पकड़ ली। अंत में धर्मेंद्र मान गए। शर्त सिर्फ़ एक थी, 'ज्यादा प्रचार नहीं करना पड़ेगा, न ज्यादा भाषण देने पड़ेगा।'

खुद धर्मेंद्र ने कई इंटरव्यू में बताया कि उनके बहुत करीबी दोस्त, बैंदनी के तत्कालीन नेता और राजस्थान के बड़े नेता (नाम उन्होंने कभी सार्वजनिक नहीं किया) बार-बार आग्रह करते रहे। बोले, 'धर्म मजी, बस एक बार आ जाओ, इलाके के लिए बहुत कुछ कर सकते हो।' पहले तो उन्होंने साफ़ मना कर दिया। कहा, 'मैं तो फिल्मों का आदमी हूं, मुझे ये सब नहीं आता।' मगर दोस्तों ने जिद पकड़ ली। अंत में धर्मेंद्र मान गए। शर्त सिर्फ़ एक थी, 'ज्यादा प्रचार नहीं करना पड़ेगा, न ज्यादा भाषण देने पड़ेगा।'

खुद धर्मेंद्र ने कई इंटरव्यू में बताया कि उनके बहुत करीबी दोस्त, बैंदनी के तत्कालीन नेता और राजस्थान के बड़े नेता (नाम उन्होंने कभी सार्वजनिक नहीं किया) बार-बार आग्रह करते रहे। बोले, 'धर्म मजी, बस एक बार आ जाओ, इलाके के लिए बहुत कुछ कर सकते हो।' पहले तो उन्होंने साफ़ मना कर दिया। कहा, 'मैं तो फिल्मों का आदमी हूं, मुझे ये सब नहीं आता।' मगर दोस्तों ने जिद पकड़ ली। अंत में धर्मेंद्र मान गए। शर्त सिर्फ़ एक थी, 'ज्यादा प्रचार नहीं करना पड़ेगा, न ज्यादा

भारत की सांस्कृतिक धरोहर उसकी लोक परंपराओं में निहित है और लोकगीत इन परंपराओं की आत्मा माने जाते हैं। जैसे ब्रज, अवधी, बुद्देलखंड और भोजपुरी की अपनी विशिष्ट लोकधारा है, वैसे ही उत्तर प्रदेश का कन्नौज क्षेत्र भी अपनी विशिष्ट कन्नौजी लोकगीत परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। कन्नौजी बोली के अंतर्गत छह जिले फर्रुखाबाद, शाहजहांपुर, हरदोई, कानपुर, इटावा और पीलीभीत आते हैं। कन्नौजी में गाए जाने वाले ये गीत न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन, भावनाओं, संस्कारों, रीति-रिवाजों और सामाजिक संबंधों का सजीव दस्तावेज भी हैं।

डॉ. प्रशांत अमिनोत्री
निदेशक, रुद्रलखंड शैक्षणिक संस्थान, शहजहांपुर

न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन, भावनाओं, संस्कारों, रीति-रिवाजों और सामाजिक संबंधों का सजीव दस्तावेज भी हैं।

हमारी गुलाबी चुनरिया हमें लागी नजरिया...

कन्नौजी लोकगीतों की उत्पत्ति और विशेषता

कन्नौजी लोकगीतों की जड़ें ग्रामीण समाज की मिट्टी में गहराई तक पैदा हुई हैं। ये गीत किसी एक कवि या लेखक की रचना नहीं, बल्कि जनजीवन के अनुभवों का सामूहिक रूप है। पीढ़ी दर पीढ़ी सुनकर और गाकर इनका रूप विकसित होता रहा है। इन गीतों में न तो व्यावसायिकता है, न कृत्रिमता, ये लोकमन की सहज अभिव्यक्ति हैं। भाषा में मुँह कन्नौजी लोहजा, सरलता और हास्य-विनोद का पूर्व इन्हें विशिष्ट बनाता है। कन्नौजी लोकगीतों की एक विशेषता यह भी है कि ये जीवन के प्रत्येक अवसर से जुड़े होते हैं - जन्म से लेकर मृत्यु तक, हर्ष और विषाद दोनों ही स्थितियों में लोकगीत गाए जाते हैं। मांगलिक अवसरों के गीत कन्नौजी बोली के क्षेत्र में संस्कार गीतों का अपना महत्व है। प्रमुखता यहां पांच प्रकार के संस्कार गीत प्राप्त होते हैं - जन्म गीत, अन्न प्राप्ति गीत, मुँडन गीत, यज्ञोपवीत गीत और विवाह गीत। पुरु जन्म के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों को सोहर जाता है, वहीं मुँडन और अन्नप्राप्ति संस्कारों के अवसर पर भी सोहर गाने की परंपरा होती है। यज्ञोपवीत के समय गाए जाने वाले गीत बुरआ कहलाते हैं, जबकि विवाह के अवसर पर बन्ना और बन्नी गाने का प्रचलन है। ये मांगलिक गीत अन्यत लोकगीत हैं। ऐसे गीतों में मातृभाव, हंसी-ठिठोली और भावुकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

कृषि और श्रम जीवन से जुड़े गीत

कन्नौजी समाज का जीवन मूलतः कृषि आधारित है, इसलिए खेती-बाड़ी, वर्षा, फसल कटाई, बैल और हल से जुड़े अनेक गीत मिलते हैं। ये गीत खेतों में काम करते समय गाए जाते हैं, जिससे श्रम का बोझ हल्का होता है और सामूहिकता की भावना बढ़ती है।

बरखा आई औरे साथी, बड़ठे न अब घर मा। / खेतन में पानी भरि आयो, चलो लगावई धान। ऐसे गीतों में किसान की मेहनत, आशा और प्रकृति के प्रति आदर झलकता है।



त्योहार और धार्मिक लोकगीत

कन्नौजी लोकगीतों में त्योहारों का बड़ा महत्व है। होली, दिवाली, रक्षाबंधन, तीज, करवाचौथ आदि पर्वों पर विशेष लोकगीत गाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त कन्नौजी क्षेत्र के मुख्य व्रत न्योहारों में शीतलाप्ती, रामनवमी, वटसावित्री व्रत, नागपंचमी, जन्माष्टमी, हल षष्ठी, हरतालिका तीज, गणेश चतुर्थी, अनंत चैदस, लक्ष्मी व्रत, नवरात्रि का व्रत, विजय दशमी, करवाचौथ, अन्नकृत, भ्रातृद्वितीया, मकर संक्रान्ति, वरसंत पंचमी, शिवरात्रि व होली हैं। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में पूर्णिमा का भी महत्व है। इन विविध पर्वों पर कन्नौजी भाषा में विविध लोकगीत गाए जाते हैं। एक कन्नौजी लोकगीत दीखेए, जिसमें देवी मां की भक्तिन पूजा करने जाती है और बीच में ही बदरिया आती है। एक दम अंधिरिया छा जाती है - सोने के थारी में भोजन परोसे / मझै मिलन हम आईरे, झुकि आई अंधिरिया / मझै जिमाउन हम आईरे, झुकि आई अंधिरिया / मझै सुवाउन हम आईरे, झुकि आई अंधिरिया।



सोहर और बन्जी

सोहर- धीरे-धीरे रेडियो बजाना मेरे राजा जी / रेडियो की आवाज सुन सासु दौड़ी आवेंगी। / उनको भी हलके से कंठन बनवाना मेरे राजा जी / पाच के बनवाना पाचास के बताना जी / धीरे-धीरे रेडियो बजाना मेरे राजा जी। एक बन्नी - बन्नी नादान बजावे हरमेनिया/दादी के कमरे बजावे हरमेनिया। / छेड़े तान हंसे सारी दुनिया/ बन्नी नादान हंसे सारी दुनिया। महिलाएं समूह में बैठकर इन गीतों को गाती हैं और उनमें स्थानीय शब्दावली, पारिवारिक संवर्धनों और ग्रामीण जीवन के प्रतीक झलकते हैं।

आर्ट गैलरी

मकबूल के घोड़े

मकबूल फिदा हुसैन के सबसे आइकॉनिक मोटिफ्स में घोड़ों को बनाना शामिल है, जो भारतीय कल्पर में गहरा सिंबोलिज्म रखते हैं। हुसैन की पेंटिंग्स में, घोड़ों को तेजी और एनर्जी के साथ दिखाया गया है। बोल्ड, एक्स्ट्रैपट रूपों में जो मूवमेंट और जिंदादिली का एहसास कराते हैं। ये चित्रण सिर्फ दिखाने से कहीं आगे जाते हैं और भारतीय समाज और संस्कृति के अलग-अलग पहलुओं को दिखाते हुए, सिंबल के दायरे में जाते हैं। हुसैन के घोड़ों की पेंटिंग्स का एक मतलब यह है कि वे आजादी और ताकत का प्रतीक हैं, जो कलाकार की आजादी और खुद को जाहिर करने की अपनी इच्छा को दिखाते हैं।



पेंटर मकबूल फिदा हुसैन

रंग-तरंगा

राजधानी दिल्ली में सालभर विशेष कार्यक्रमों और प्रदर्शनियों का आयोजन होता रहता है। बीते दिनों जहां भारत मंडपम में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला चल रहा है, वहीं निजमुद्दीन दरगाह के करीब बने हुमायूं टॉम्ब की सुंदर नरसी में जीवंत शिल्प ग्राम और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। महोत्सव में लोक एवं जनजातीय कला एवं शिल्प महोत्सव में देश के विभिन्न राज्यों से आए शिल्पकारों ने अपनी कला के प्रदर्शन से लोगों का मन मोह लिया।



सुंदर नरसी में जीवंत शिल्प ग्राम की डालक: सुंदर नरसी, दिल्ली का मुगल उद्यान है, जिसे अब एक जीवंत स्थल में बदल दिया गया है। यहां शिल्प बाजारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और टैक्सी कैफे का आयोजन होता है। यह सिर्फ एक पिकनिक स्थल नहीं, बल्कि अब यहां विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियां होती हैं, जिनमें "शिल्प ग्राम" भी शामिल है।

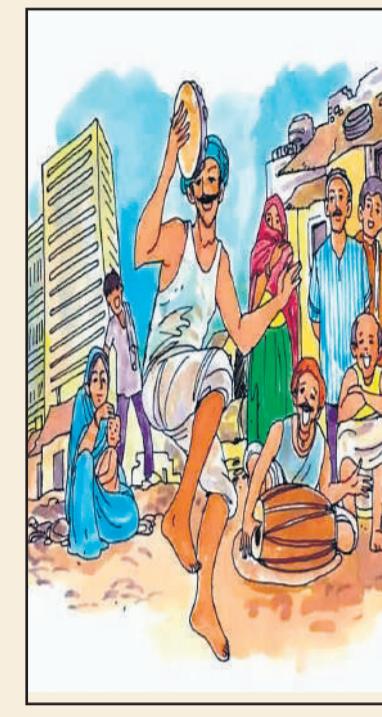
कर्फ गार्डनीय पुरस्कार विजेता कारीगर भी पहुंचे:

प्रदर्शनी में शिल्प कला क्षेत्र के गार्डनीय पुरस्कार विजेता कारीगर मधुबनी चित्रकला, वरली चित्रकला, गोड चित्रकला और भील चित्रकला, टेराकोटा शिल्प, बांस शिल्प, सुलेख, सिक्की बांस बुनाई, सुलेख - लकड़ी की नक्काशी और पेपर्मीची शिल्प पर इंटरेक्टिव कार्यालयां।

कई तरह के मधुबनी पेंटिंग्स की दिखांची कलाकृतियां:

भागतामक और प्रेमपरक गीत

कन्नौजी लोकगीतों में प्रेम, विहर और सौंदर्य की भावनाएं भी प्रमुख से मिलती हैं। मेरा रेसर्मी दुपट्टा जरा गोटा लगादो / जरा गोटा लगादो... सोने की थाली में भोजन बनाए / मेरा जेमन बाला दूर बसा / कोई जलदी बुला दो... कभी ये गीत सीधी सच्ची प्रेमाभिव्यक्ति होते हैं,



तो कभी सांकेतिक और रूपकात्मक स्त्री का विहर, पति को प्रतीक्षा, सजन की विदाई-ये सब विवर बार-बार आते हैं।

साउन लागे आज सुहावन जी। / एजी कोइ घटा दबी हई कोर / नहीं-नहीं बुदियन में बरसी रहे / एजी काँड़े पवन चले सर्झजोरा एसे गीतों में भाषा की मिठास और भावनाओं की गहराई दोनों अद्भुत रूप से मिलती है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व कन्नौजी लोकगीतों में केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना के दर्शन हैं। इन गीतों से समाज की संरचना, नारी की भूमिका, नैतिक मूल्यों और लोकाचारों की ज़िल्कल मिलती है। इनके माध्यम से लोकसंस्कृति पीढ़ी-दो-पीढ़ी स्थानांतरित होती रही है। महिलाओं के लिए ये गीत स्व-अभिव्यक्ति का साधन हैं - वे अपनी भावनाएं, पीढ़ा, आनंद और आकांक्षाएं इन्हीं गीतों में व्यक्त करती हैं।

स्व-अभिव्यक्ति का एक उदाहरण देखें, जिसमें सुसुराल की पीढ़ा भी अभिव्यक्त होती है।

हमारी गुलाबी चुनरिया, हमें लागी नजरिया। / सासु हमारी जन्म की बैरिन / हमसे करामै रसुद्दिया, मेरी बारी उमरिया / जेटानी हमारी जन्म की ब

